गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 251
दि. 11.01.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : अमर विरासत की उज्ज्वल गाथा,स्वर्णमय सोमनाथ का पुन: स्थापित हो रहा वैभव

- श्री सोमनाथ मंदिर पर 1500 से अधिक कलश स्वर्ण जड़ित हुए
- सोमनाथ मंदिर का गर्भगृह, गर्भगृह के द्वार तथा द्वार के पास के स्तंभ, थाल आदि स्वर्ण से अलंकृत
- श्री सोमनाथ मंदिर के शिखर पर स्थापित ध्वदंड और उसके साथ जुड़ा त्रिशूल भी है स्वर्ण जड़ित
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इतिहास पुराणों में वर्णित सोमनाथ का वैभव पुनः स्थापित हो रहा है : इतिहासप्रेमी तथा अध्ययनी श्री भास्करभाई वैद्य
- प्रधानमंत्री तथा सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में पुनः स्थापित हो रही सोमनाथ की पौराणिक वैभवता तथा भव्यता

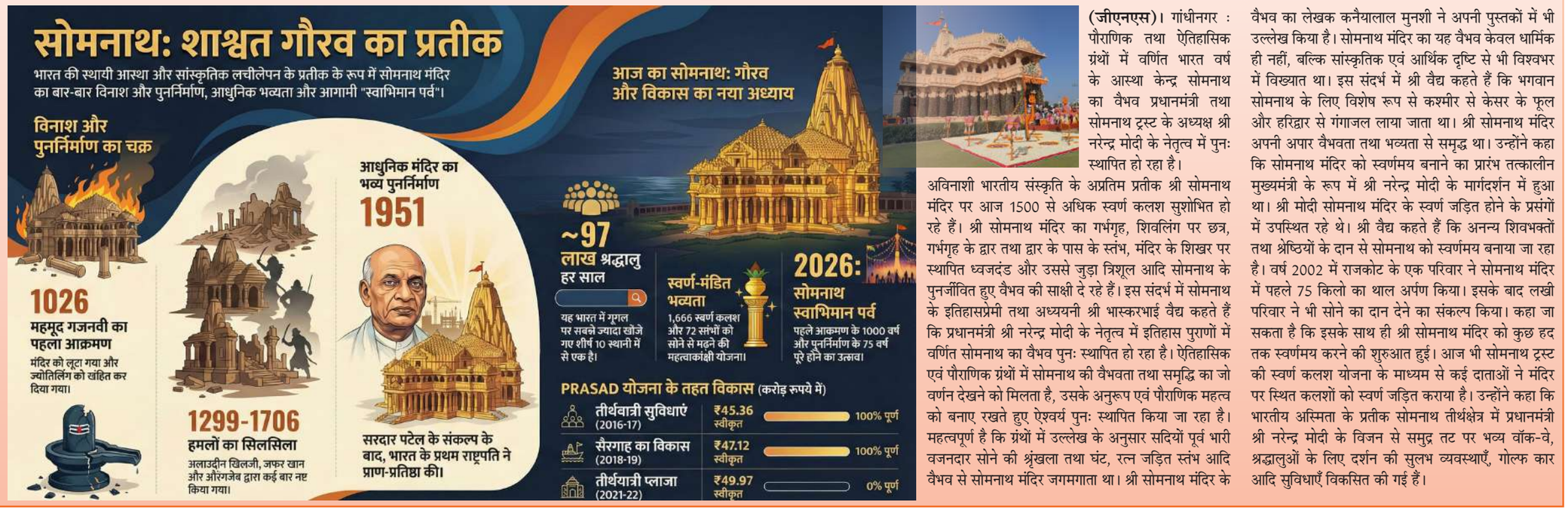

(जीएनएस)। गांधीनगर : पौराणिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथों में वर्णित भारत वर्ष के आस्था केन्द्र सोमनाथ का वैभव प्रधानमंत्री तथा सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पुनः स्थापित हो रहा है।

अविनाशी भारतीय संस्कृति के अप्रतिम प्रतीक श्री सोमनाथ मंदिर पर आज 1500 से अधिक स्वर्ण कलश सुशोभित हो रहे हैं। श्री सोमनाथ मंदिर का गर्भगृह, शिवलिंग पर छत्र, गर्भगृह के द्वार तथा द्वार के पास के स्तंभ, मंदिर के शिखर पर स्थापित ध्वजदंड और उससे जुड़ा त्रिशूल आदि सोमनाथ के पुनर्जीवित हुए वैभव की साक्षी दे रहे हैं। इस संदर्भ में सोमनाथ के इतिहासप्रेमी तथा अध्ययनी श्री भास्करभाई वैद्य कहते हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इतिहास पुराणों में वर्णित सोमनाथ का वैभव पुनः स्थापित हो रहा है। ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रंथों में सोमनाथ की वैभवता तथा समृद्धि का जो वर्णन देखने को मिलता है, उसके अनुरूप एवं पौराणिक महत्व को बनाए रखते हुए ऐश्वर्य पुनः स्थापित किया जा रहा है। महत्वपूर्ण है कि ग्रंथों में उल्लेख के अनुसार सदियों पूर्व भारी वजनदार सोने की श्रृंखला तथा घंट, रत्न जड़ित स्तंभ आदि वैभव से सोमनाथ मंदिर जगमगाता था। श्री सोमनाथ मंदिर के वैभव का लेखक कनैयालाल मुनशी ने अपनी पुस्तकों में भी उल्लेख किया है। सोमनाथ मंदिर का यह वैभव केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी विश्वभर में विख्यात था। इस संदर्भ में श्री वैद्य कहते हैं कि भगवान सोमनाथ के लिए विशेष रूप से कश्मीर से केसर के फूल और हरिद्वार से गंगाजल लाया जाता था। श्री सोमनाथ मंदिर अपनी अपार वैभवता तथा भव्यता से समृद्ध था। उन्होंने कहा कि सोमनाथ मंदिर को स्वर्णमय बनाने का प्रारंभ तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में हुआ था। श्री मोदी सोमनाथ मंदिर के स्वर्ण जड़ित होने के प्रसंगों में उपस्थित रहे थे। श्री वैद्य कहते हैं कि अनन्य शिवभक्तों तथा श्रेष्ठियों के दान से सोमनाथ को स्वर्णमय बनाया जा रहा है। वर्ष 2002 में राजकोट के एक परिवार ने सोमनाथ मंदिर में पहले 75 किलो का थाल अर्पण किया। इसके बाद लखी परिवार ने भी सोने का दान देने का संकल्प किया। कहा जा सकता है कि इसके साथ ही श्री सोमनाथ मंदिर को कुछ हद तक स्वर्णमय करने की शुरुआत हुई। आज भी सोमनाथ ट्रस्ट की स्वर्ण कलश योजना के माध्यम से कई दाताओं ने मंदिर पर स्थित कलशों को स्वर्ण जड़ित कराया है। उन्होंने कहा कि भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ तीर्थक्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से समुद्र तट पर भव्य वॉक-वे, श्रद्धालुओं के लिए दर्शन की सुलभ व्यवस्थाएँ, गोल्फ कार आदि सुविधाएँ विकसित की गई हैं।

'शिव समा रहे मुझमें और मैं शून्य हो रहा हूं'

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हंसराज रघुवंशी के साथ भोलेनाथ के भक्ति गीतों में शिवमय हुए हजारों भक्त

राज्य और देश भर से आए दर्शनार्थियों ने गुजरात सरकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रशंसा की

(जीएनएस)। गांधीनगरः सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत सोमनाथ मंदिर परिसर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के तीसरे दिन शनिवार को हजारों शिव भक्त प्रसिद्ध गायक हंसराज रघुवंशी के शिव भक्ति के गीत-संगीत में श्रद्धाभाव के साथ शिवमय हो गए।

'शिव सम रहे मुझमें और मैं शून्य हो रहा हूं', 'जयकारा बोलो, जयकारा', 'मेरा भोला है भंडारी' और 'भोलेनाथ की शादी है तो नाचेंगे' जैसे शिव भक्ति के भजन-गीतों की प्रस्तुति से प्रवासी भक्त शिव भक्ति के रंग में रंग गए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में मनाए जा रहे स्वाभिमान पर्व के तीसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम के आकर्षण के कारण सोमनाथ मंदिर का समूचा परिसर भक्तों की भीड़ से भर गया। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन और उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी के समन्वय से सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के कार्यक्रमों की सुंदर प्रस्तुति से यह पर्व हजारों शिव भक्तों के लिए यादगार बन गया है।

शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा और विधि एवं ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत 72 घंटे के अखंड ओंकार जाप में भावपूर्वक सहभागी हुए

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व राष्ट्र के अडिग स्वाभिमान का प्रतीक

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत शनिवार को शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा और विधि एवं ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया ने ऋषि कुमारों द्वारा चल रहे 72 घंटे के अखंड ओंकार मंत्र के जाप में भावपूर्वक सहभागी हुए।

इस अवसर पर मंत्रियों के साथ जूनागढ़ के विधायक श्री संजयभाई कारड़िया ने भी अखंड मंत्र जाप में भाग लिया।

महानुभावों ने श्री सोमनाथ महादेव के पावन दर्शन कर राज्य के नागरिकों की खुशहाली, शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना की।

इसके अलावा, राजकोट की विधायक डॉ. दर्शिताबेन शाह ने भी श्री सोमनाथ महादेव के दर्शन किए।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित इस आध्यात्मिक कार्यक्रम के माध्यम से श्रद्धा, संस्कृति और स्वाभिमान की भावना को और भी मजबूत बनाया जा रहा है।

पवित्र प्रभास क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का महिला धुन मंडली ने शिव भजनों से किया स्वागत

करताल-मंजीरे जैसे तालवाद्यों के संग भजन-कीर्तन से समग्र प्रांगण बना शिवमय

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत शनिवार को प्रभास क्षेत्र की पावन भूमि पर पधारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अहमदाबाद की धुन मंडली की लगभग 450 महिलाओं द्वारा शिव भजनों से ऊष्मापूर्वक स्वागत किया गया। सोमनाथ मंदिर के विशाल प्रांगण में प्रधानमंत्री के आगमन के समय लगभग 450 बहनों द्वारा चल रहे अखंड भजन-कीर्तन के साथ शिवमय वातावरण में उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

इस प्रकार; प्रधानमंत्री के मंदिर आगमन के समय करताल-मंजीरे जैसे तालवाद्यों के संग भजन-कीर्तन से समग्र प्रांगण शिवमय बना।

बामनिया यार्ड में क्रॉसओवर शिफ्टिंग कार्य निर्धारित समय में हुआ पूरा

पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल की उपलब्धि, ट्रेन संचालन में बढ़ेगी संरक्षा,सुरक्षा व गति

(जीएनएस)। रतलाम। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के रतलाम - गोधरा खंड के बामनिया यार्ड डाउन लाइन पर महत्वपूर्ण ट्रैक सुधार कार्य निर्धारित समयावधि में सफलतापूर्वक पूरा हो गया।

रतलाम मंडल के इंजीनियरिंग, सिगनल, परिचालन, बिजली टी आर डी. सहित अन्य विभाग के आपसी समन्वय के कारण किलो मी. नं. 610/20-24 पर स्थित पॉइंट नंबर 129-130 के क्रॉसओवर पर खराब लेआउट को ठीक करने हेतु 09 जनवरी, 2025 को 14:55 से 17:55 बजे तक लगभग तीन घंटे का ब्लॉक लेकर पॉइंट नंबर 130 को रतलाम की ओर 1.45 मीटर शिफ्ट किया गया।

पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल जनसंपर्क अधिकारी श्री मुकेश कुमार द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार कार्य के दौरान मेन लाइन में 3 और क्रॉसओवर पर 2 नई स्लीपरें सहित कुल 6 स्लीपरें बिछाई गईं, जिससे ट्रैक लेआउट मानकों के अनुरूप हो गया। इस कार्य में सहायक मंडल इंजीनियर (पूर्व) सहित अन्य अधिकारी के साथ ही 4 पर्यवेक्षक और 60 श्रमिकों की टीम ने जेसीबी, टैंपिंग मशीन, टावर वेगन के साथ-साथ रोलर्स, मैकेनिकल ट्रैक जैक्स, रेल कटर एवं अन्य मशीनों का उपयोग कर निर्धारित समयसीमा में लक्ष्य हासिल किया। इस सुधार से न केवल यात्रियों की सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि ट्रेनों की गति व संचालन दक्षता में भी सुधार होगा।

पश्चिम रेलवे का रतलाम मंडल संरक्षित एवं सुरक्षित ट्रेन परिचालन के लिए ट्रैक रख रखाव में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के प्रति कटिबद्ध है।

जनसंपर्क विभाग
रतलाम मंडल

भगवान सोमनाथ के समक्ष अरब सागर के आकाश में तीन हजार ड्रोन से बनी विभिन्न आकृतियां

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में आयोजित ड्रोन शो को देखकर मंत्रमुग्ध हुए लोग
- ड्रोन के जरिए आकाश में बनी त्रिशूल, ओम, वीर हमीरजी, अहिल्याबाई होल्कर, सरदार वल्लभभाई पटेल और श्री नरेन्द्र मोदी की आकृतियां
- ड्रोन शो के बाद सोमनाथ मंदिर के निकट स्थित समुद्र तट भव्य आतिशबाजी से जगमगा उठा

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत शनिवार रात सोमनाथ मंदिर परिसर में भव्य और आकर्षक ड्रोन शो का आयोजन किया गया। इस अनोखे आयोजन से पवित्र सोमनाथ धाम में उत्सवमय और हर्षोल्लास का माहौल बन गया था।

इस ड्रोन शो में लगभग 3000 ड्रोन के जरिए अरब सागर के ऊपर आकाश में प्रकाश के अनूठे संयोजन के माध्यम से विभिन्न बिंदु चित्र-रंगीन आकृतियां सृजित की गईं। आकाश में उभरते प्रकाशमय दृश्य लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बन गए। ड्रोन लाइट के माध्यम से त्रिशूल, ओम, तांडव नृत्य करते भगवान शंकर, वीर हमीरजी, अहिल्याबाई होल्कर, सोमनाथ पर आक्रमण, सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वाभिमान पर्व का लोगो और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आकृतियां प्रदर्शित की गईं। इन सभी आकृतियों ने भारतीय संस्कृति, आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया।

इस भव्य ड्रोन शो का संचालन कुल 40 प्रशिक्षित ऑपरेटरों ने सुव्यवस्थित तरीके से किया। लगभग 15 मिनट तक चले इस शो ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पटांगण में उपस्थित रहकर इस भव्य ड्रोन शो को निहारकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने भी इन अद्भुत दृश्यों को अपलक देखकर गौरव और आनंद का अनुभव किया।

ड्रोन शो पूरा होने के बाद तुरंत ही निकट स्थित समुद्र तट पर भव्य आतिशबाजी की गई। विभिन्न प्रकार के क्रैकर्स से आकाश रोशनी से नहाया हुआ नजर आ रहा था।

वडोदरा मंडल के श्री अपूर्व तिवारी एवं श्री चिराग मित्तल अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित

(जीएनएस)। माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर, यशोभूमि में शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026 को आयोजित 70वें रेल सप्ताह केंद्रीय समारोह में पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री अपूर्व तिवारी एवं उप मुख्य इंजीनियर श्री चिराग मित्तल को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित किया गया।

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना ने बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर सभी जोनल रेलवेज़ से लगभग 100 रेल कर्मचारियों को व्यक्तिगत पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें से पश्चिम रेलवे के सात अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सराहनीय एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया, जो उनके असाधारण समर्पण, पेशेवर दक्षता तथा कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। पश्चिम रेलवे के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री अपूर्व तिवारी एवं उप मुख्य इंजीनियर श्री चिराग मित्तल को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित किया गया।

वडोदरा मंडल के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर (कार्य) श्री अपूर्व तिवारी को इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणालियों के सफल कमीशनिंग तथा परंपरागत सिगनलिंग के स्थान पर आधुनिक मल्टी सेक्शन डिजिटल एक्सल काउंटर (MSDAC) प्रणालियों के प्रतिस्थापन को कई खंडों में लक्ष्य तिथियों से पूर्व पूर्ण करने के लिए सम्मानित किया गया। उनके इस कार्य से परियोजना निष्पादन में नए मानदंड स्थापित हुए तथा रेल परिचालन की सुरक्षा एवं दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उप मुख्य इंजीनियर (सर्वे एवं निर्माण) श्री चिराग मित्तल को रिकॉर्ड समय-सीमा में प्रमुख सिविल इंजीनियरिंग कार्यों के पूर्ण होने में उनकी उत्कृष्ट भूमिका के लिए सम्मानित किया गया। इनमें दोहरीकरण खंडों का कमीशनिंग, महत्वपूर्ण पुलों का निर्माण, स्टेशन पुनर्विकास कार्य तथा साइडिंग परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनसे अवसंरचना क्षमता, यात्री सुविधाओं एवं परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

प्रतिष्ठित व्यक्तिगत पुरस्कारों की प्राप्ति में पश्चिम रेलवे का उत्कृष्ट प्रदर्शन उसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों की निष्ठा, पेशेवर दक्षता तथा टीम भावना का सशक्त प्रमाण है। ये उपलब्धियाँ सुरक्षा, सेवा उत्कृष्टता, नवाचार एवं अवसंरचना विकास के प्रति पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल की अटूट प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती हैं तथा भारतीय रेल को एक आधुनिक, दक्ष एवं यात्री-केंद्रित राष्ट्रीय परिवहन व्यवस्था के रूप में विकसित करने के व्यापक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सोमनाथ हेलीपैड पर भावपूर्ण स्वागत

(जीएनएस)। गांधीनगर, 10 जनवरी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में आयोजित हो रहे 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में शामिल होने के लिए शनिवार शाम सोमनाथ पहुंचे, जहां मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया।

हेलीपैड पर प्रधानमंत्री के स्वागत-सत्कार के लिए उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी, शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, मांडवी के विधायक श्री अनिरुद्धभाई दवे, कलेक्टर श्री एन.वी. उपाध्याय, जिला पुलिस अधीक्षक श्री जयदीपसिंह जाडेजा और अग्रणी डॉ. संजयभाई परमार उपस्थित रहे।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी ने स्थल मुलाकात लेकर कानून-व्यवस्था की समीक्षा की

उप मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री की सोमनाथ यात्रा के चलते मंदिर परिसर, सुरक्षा व्यवस्था तथा यातायात व्यवस्था का निरीक्षण किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमाममय उपस्थिति में सोमनाथ में आयोजित होने वाले सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के सुचारु आयोजन तथा कानून-व्यवस्था की स्थिति सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी ने शनिवार को सोमनाथ महादेव परिसर तथा आसपास के क्षेत्रों की प्रत्यक्ष मुलाकात ली। इस पवित्र अवसर पर सुरक्षा व्यवस्था में कोई कमी न रहे; इसके लिए उन्होंने उच्चाधिकारियों के साथ ग्राउंड लेवल पर तैयारियों की समीक्षा करते हुए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। इस दौरान श्री संघवी ने मंदिर परिसर के मुख्य प्रवेश द्वार, आसपास के मुख्य एवं वैकल्पिक मार्गों तथा श्रद्धालुओं-यात्रियों की आवागमन व्यवस्था का सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण किया। उन्होंने सुरक्षा बंदोबस्त, यातायात सचालन तथा पार्किंग व्यवस्था के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। इसके साथ ही; प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्थानीय नागरिकों तथा देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को भी किसी भी प्रकार की असुविधा न हो; उसका ध्यान रखने का भी सुझाव दिया।

गृह मंत्री ने सुरक्षा व्यवस्था को और अभेद्य बनाने के लिए भीड़ नियंत्रण, इमर्जेंसी सेवाओं की सज्जता तथा टेक्नोलॉजी के उपयोग को लेकर सम्बद्ध अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने प्रशासन का आह्वान किया कि सभी विभागों के बीच आपसी तालमेल बना रहे और कार्यक्रम शांतिपूर्ण तथा सफलतापूर्ण ढंग से संपन्न हो। इस अवसर पर केबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी व डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, राज्य मंत्री श्री कौशिक वेकरिया, सांसद श्री राजेश चुडासमा सहित जिला प्रशासन तथा पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

दूषित पेयजल

यह विडंबना ही है कि हमारे नागरिक प्रशासन का नियामक तंत्र आग लगने पर कुआं खोदने की मानसिकता से मुक्त नहीं होता। यदि समय रहते संवेदनशील या फिर घातक साबित होने वाली स्थिति व परिस्थिति पर नजर रखी जाए तो जनधन की हानि टाली भी जा सकती है। हाल ही में दूषित पेयजल से इंदौर में हुई जन हानि के बाद रोहतक और झज्जर की उन चेतावनियों की अनदेखी नहीं की जा सकती,जिसमें नागरिक घरों में आने वाले गंदे व बदबूदार पानी की शिकायत करते रहे हैं। निश्चय ही इस स्थिति को जन स्वास्थ्य से जुड़े आपातकाल के रूप में देखा जाना चाहिए। इसके साथ ही नागरिकों की शिकायत की जांच-पड़ताल कर अविलंब कार्रवाई भी होनी चाहिए। लेकिन इसके बावजूद जवाबदेही न निभाने और एक-दूसरे विभाग पर दोष मढ़ने का पुराना सिलसिला ही अकसर सामने आता है। उल्लेखनीय है कि इंदौर की हालिया दूषित पेयजल की त्रासदी में नगरपालिका द्वारा सप्लाई किए जा रहे पानी के सेवन से कई लोगों की जान चली गई और बड़ी संख्या में लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। विडंबना यह है कि वहां भी नागरिकों की शुरुआती चेतावनियों को सामान्य शिकायतों के रूप में देखकर खारिज कर दिया गया था। लेकिन एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत के बाद अधिकारियों ने स्वीकार किया कि इंदौर में पेयजल पाइपलाइनों में सीवेज का रिसाव हुआ था। यह स्वीकारोक्ति भी तब सामने आई जब बड़ा नुकसान हो चुका था। लगता है कि रोहतक व झज्जर भी इसी तरह के आसन्न खतरे के मुहाने पर खड़े हैं। वैसे देखा जाए तो देश के विभिन्न हिस्सों में सामने आने वाले ऐसे मामले न तो रहस्यमय हैं और न ही ये कोई नई बात ही है। बुनियादी ढांचागत व्यवस्था का जर्जर होना, सीवर लाइनों में रिसाव, अनियोजित शहरी विस्तार और नागरिक एजेंसियों के बीच आवश्यक समन्वय का अभाव, अकसर ऐसी स्थिति पैदा कर देता है, जहां सीवेज और पीने का पानी खतरनाक रूप से एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं। गाहे-बगाहे देश के विभिन्न भागों में स्थानीय नागरिक जब-तब आरोप लगाते हैं कि पीने के पानी में सीवर का पानी मिलने की आशंका है। ऐसे में शासन-प्रशासन की पहली प्रतिक्रिया, इसके सत्यापन, पाइप लाइन की मरम्मत और वैकल्पिक पेयजल उपलब्ध कराने की होनी चाहिए। ऐसे में स्वास्थ्य संकट को दूर करने और अपनी बात मनवाने के लिये यदि नागरिकों को सड़कों पर उतरना पड़ता है तो यह शासन-प्रशासन की विफलता को ही दर्शाता है। विडंबना यह है कि जल प्रदूषण का सबसे बुरा असर समाज के कमजोर वर्ग पर ही पड़ता है। ऐसे में बच्चे, बुजुर्ग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग इसकी चपेट में आते हैं। निर्विवाद रूप से दूषित जल से डायरिया, हेपेटाइटिस और अन्य दूषित जल जनित बीमारियों का प्रभाव तेजी से फैलता है। जिसके चलते अफरा-तफरी के बीच अक्सर स्थानीय स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा जाती है। ऐसे में तंत्र की निष्क्रियता की कीमत आम लोगों को न केवल अस्पताल के भारी-भरकम बिलों के रूप में, बल्कि जानमाल के नुकसान और प्रशासन के प्रति जनता के विश्वास में आई कमी के रूप में भी चुकानी पड़ती है। निश्चित रूप से दूषित पाइपलाइनों को तुरंत बंद किया जाना चाहिए। व्यापक स्तर पर प्रभावित क्षेत्र में जल स्रोतों का परीक्षण होना चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी है कि प्रभावित क्षेत्र में व्यापक स्तर पर लिए गए पानी के नमूनों की जांच के परिणाम भी सार्वजनिक किए जाएं। इसके अलावा आवश्यक है कि दूषित सिस्टम के सुरक्षित प्रमाणित होने तक सुरक्षित वैकल्पिक जल आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिम्मेदारी तय की जाए, न कि बांटी जानी चाहिए। सही मायनों में शहरी प्रशासन की कुशलता को स्वच्छ जल, स्वच्छता और जन-सुरक्षा जैसी बुनियादी बातों के मूल्यांकन के आधार पर मापा जाना चाहिए। ऐसे में इंदौर के घटनाक्रम को एक चेतावनी मानते हुए रोहतक और झज्जर के मामले में तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत है।

एआई मॉडल और कॉपीराइट कंटेंट के दुरुपयोग का सवाल

“ एआई कंपनियां कॉपीराइट वाले कंटेंट के उपयोग से एलएलएम मॉडल प्रशिक्षित कर बिजनेस कर रही हैं जो सवालों के घेरे में है। बेशक एलएलएम व अन्य मॉडल तकनीकी नवोन्मेष का नतीजा है, लेकिन यह दशकों से लाखों रचनाकारों द्वारा निर्मित काम की डिजिटल चोरी पर टिका है। प्रस्तावित कॉपीराइट फ्रेमवर्क में रचनाकारों के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

जैसे ही साल खत्म हो रहा था, उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग ने ‘जेनरेटिव एआई एंड कॉपीराइट’ पर एक कार्यपत्र प्रकाशित किया। यह अप्रैल, 2025 में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में कॉपीराइट सुरक्षा के जटिल सवाल की जांच के लिए गठित की गई एक विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट है, और इसके निष्कर्षों से निकट भविष्य में कॉपीराइट और जेनरेटिव एआई के संबंध में भारत की आधिकारिक नीति का आधार बनने की सर्वाधिक संभावना है। जेनरेटिव एआई उत्पाद जैसे कि चैटजीपीटी, जेमिनी, परप्लेक्सिटी इत्यादि लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) हैं, जो यूजर्स द्वारा दिए गए प्रॉम्प्ट्स (निर्देश) के आधार पर कंटेंट उत्पन्न करके देते हैं। मसलन, कोई व्यक्ति चैट जीपीटी को कहे कि आरके नारायण या मुंशी प्रेमचंद की शैली में एक लघु कहानी लिखकर दो, और वह उसे उत्पन्न कर दे। इसी तरह, डाल-ई, मिडजर्नी (और इस जैसे टेक्स्ट-टू-इमेज और टेक्स्ट-टू-वीडियो जेनरेशन मॉडल) दिए गए विषय पर पेंटिंग बनाकर पेश कर सकते हैं, जिसके लिए निर्देश दिए जाएं कि इनकी शैली जैमिनी रॉय या एमएफ हुसैन जैसी हो। या फिर सत्यजीत रे की शैली में एक लघु फिल्म क्लिप बनाने को कहा जाए। जेनरेटिव एआई मॉडल से उत्पन्न होने वाली सामग्री उनके प्रशिक्षण पर आधारित होती है, जिसमें विभिन्न प्रकार के स्रोत (जैसे नारायण के उपन्यास या हुसैन और अन्य की पेंटिंग) से प्राप्त डेटा का उपयोग किया जाता है।

एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला डेटा विभिन्न श्रेणियों वाला हो सकता है- कॉपीराइटेड, कॉपीराइट-समाप्त और सार्वजनिक डोमेन में ‘उचित उपयोग’ की अनुमति वाला उपलब्ध डेटा। जब से प्रौद्योगिकी फर्मों ने जेनरेटिव एआई उत्पादों के व्यावसायिक संस्करण लॉन्च किए हैं, किताबों, शोधपत्रों, तस्वीरों,

फिल्मों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों के विभिन्न रूपों जैसी कॉपीराइटेड सामग्री में उनके उपयोग का सवाल एआई बहस का केंद्र बन गया है। इसने जटिल कानूनी, नैतिक और औचित्य संबंधी प्रश्न खड़े कर दिए। एक और अनसुलझा मुद्दा एआई-जनित आउटपुट की कॉपीराइट-योग्यता और लेखक का अधिकार है।

कई देशों में सरकारें और अदालतें इस नए चलन -एआई मॉडल का डेटा प्रशिक्षण- से निपटने के लिए जूझ रही हैं। भारत सहित दुनियाभर की प्रौद्योगिकी कंपनियों की दलील है कि एआई मॉडल कॉपीराइट कानूनों का उल्लंघन नहीं करते क्योंकि वे कॉपीराइटेड किताबों, तस्वीरों आदि की नकल या साहित्यिक चोरी नहीं कर रहे हैं, बल्कि केवल अलग डेटासेट के रूप में एल्गोरिद्म को प्रशिक्षित करने के लिए पैटर्न, शैलियों, संरचनाओं का उपयोग करके सांख्यिकीय संबंध के संदर्भ में उन्हें नई सामग्री उत्पन्न करने में सक्षम बनाने को कर रहे हैं। उनका दावा है कि यह रचनात्मक कार्यों का ‘उचित उपयोग’ वाले सर्वमान्य सिद्धांत के अनुरूप है।

यह तर्क देना कि एआई मॉडल मूल कामों की ‘नकल’ नहीं कर रहे, बल्कि उनसे सिर्फ़ ‘सीख’ रहे हैं, सही नहीं। क्योंकि एक एआई सिस्टम को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं, जिसमें डेटा (मूल सामग्री) की कॉपी करना और स्टोर करना शामिल है, जो वस्तुतः कॉपीराइट का उल्लंघन है। जबकि एआई उद्योग का कहना है कि इसे ‘तकनीकी उल्लंघन’ माना जा सकता है, कानूनी नहीं।

यह धारणा खारिज करते हुए कि किसी कॉपीराइट लाइसेंसिंग की ज़रूरत नहीं, दुनिया के दूसरे हिस्सों में इस पर चल रही चर्चा या लागू किए जा चुके अलग-अलग मॉडलों का अध्ययन करने के बाद, विशेषज्ञ समिति ने भारत के लिए हाइब्रिड फ्रेमवर्क की सिफारिश की है। इसने एआई डेवलपर्स को एआई सिस्टम को प्रशिक्षित करने में कानूनन एक्सेस किए गए कॉपीराइट-सुरक्षित कामों के इस्तेमाल के लिए एक ब्लैंकेट लाइसेंस दिए जाने का सुझाव दिया है, बशर्ते कॉपीराइट धारकों को रॉयल्टी का भुगतान किया जाए। लेकिन अधिकार धारकों के पास एआई सिस्टम को प्रशिक्षित करने में अपने कामों का इस्तेमाल करने से रोकने का विकल्प नहीं होगा।

अधिकार धारक संगठनों की उपस्थिति और सरकार द्वारा नामित एक केंद्रित नॉन-प्रॉफिट संस्था एआई डेवलपर्स से पेमेंट उगाहने के लिए ज़िम्मेदार होगी। इस संस्था में कॉपीराइट सोसायटी और उद्योग संगठन इसके सदस्य होंगे, और निजी रचनाकारों तक रॉयल्टी पहुंचाने के काम के लिए इस प्रकार के सदस्य-संगठन ज़िम्मेदार होंगे। कॉपीराइट सामग्री से प्रशिक्षित कर बने एआई सिस्टम से कमाई का एक निश्चित प्रतिशत बतौर रॉयल्टी देय होगा और दरें एक सरकारी समिति तय करेगी।

तकनीक विकसित करने वाली कंपनियों का तर्क है कि रचनात्मक कामों के उपयोग को नियंत्रित करना व लाइसेंसिंग को अनिवार्य बनाने के लिए नए कॉपीराइट कानून लागू करना तकनीकी नवाचार में बाधा डालेगा। वे एआई मॉडल को प्रशिक्षण मुमकिन बनाने को कॉपीराइट कानूनों में टेक्स्ट और डेटा माइनिंग (टीडीएम) को छूट देने की मांग करते हैं। उद्योग संस्थानों के प्रतिनिधि, नैसकॉम, ने विशेषज्ञ कमेटी में इसकी सिफारिशों से असहमति जताई। एआई मॉडल से कमाई पर आधारित कॉपीराइट सिस्टम के बजाय वह कॉपीराइटेड कंटेंट का इस्तेमाल करने को एक लेयर्ड सिस्टम चाहता है। नैसकॉम ने सुझाव दिया कि टीडीएम के लिए सार्वजनिक उपलब्ध अपने काम का इस्तेमाल रोकने की जिम्मेवारी राइट्स होल्डर्स की थी, और इसके लिए, उन्हें अपने काम की उपलब्धता के समय ‘ऑप्ट आउट’ का विकल्प दिया जाए। जो कंटेंट सार्वजनिक उपलब्ध नहीं, उसके लिए राइट्स होल्डर्स कॉन्ट्रैक्ट या लाइसेंस शर्तों के ज़रिए अपने हकों की रक्षा कर सकते हैं। ये सब अधिकारधारकों पर अपने काम की रक्षा का जिम्मा डालता है, जो मौजूदा हालात में होना बेहद मुश्किल है क्योंकि कॉपीराइट का खुलेआम उल्लंघन जारी है व संरक्षित सामग्री अवैध रूप से ऑनलाइन उपलब्ध है। तकनीक निर्माण कंपनियों ने ऑनलाइन उपलब्ध लाखों किताबों से डेटा पहले ही कॉपी कर लिया। इस परिदृश्य में ‘ऑप्ट आउट’ ऑप्शन भी अव्यावहारिक लगता है। दोनों सूरतों में, जो लोग नूतन काम उत्पन्न करते हैं (राइट्स होल्डर्स) नुकसान उन्हें ही होगा। विशेषज्ञ पैनल एआई सिस्टम के प्रशिक्षण हेतु कॉपीराइट-संरक्षित कामों की स्वचालित उपलब्धता चाहता है और यह एआई इंडस्ट्री की मदद के लिए इसे कानूनी निश्चिंतता देगा, जबकि कॉपीराइट धारकों के पास टीडीएम सिस्टम से ऑप्ट आउट करने का अधिकार नहीं होगा। दूसरी ओर, एआई उद्योग सरकार द्वारा प्रस्तावित रॉयल्टी-आधारित सिस्टम स्वीकार करने को तैयार नहीं, बल्कि कॉपीराइट धारकों को ‘ऑप्ट आउट’ या निजी कॉन्ट्रैक्ट जैसे तरीकों से अपने कामों की रक्षा खुद करने के लिए ज़िम्मेदार बनाना चाहता है। दोनों प्रकार के तरीके मूल सामग्री के सृजनकारों के लिए अनुचित हैं। किसी भी सूरत में, रचयिता को उन प्लेटफॉर्मों (और अन्य बिचौलियों) की नीतियों व मनमर्ज़ी पर निर्भर होना होगा जहां उनका कंटेंट पेश किया जाएगा।

एआई कंपनियों ने अरबों डॉलर के बिजनेस बनाने शुरू कर दिए और इसका आकार बढ़ने के अनुमान हैं। हां, एलएलएम और अन्य मॉडल तकनीकी नवोन्मेष का नतीजा हैं, लेकिन यह दुनियाभर में दशकों से लाखों रचनाकारों द्वारा निर्मित काम की डिजिटल चोरी पर टिका है। जो कॉपीराइट फ्रेमवर्क भारत प्रस्तावित कर रहा है, उसे उद्योग के हितों से पहले रचनाकारों के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

प्रेरणा

कम चर्चा, बड़ा भरोसा

भारतीय कृषि लंबे समय तक गेहूं, धान, गन्ना और कुछ गिनी-चुनी नकदी फसलों के इर्द-गिर्द घूमती रही है। लेकिन बदलते समय, मौसम की अनिश्चितता और बाजार के उतार-चढ़ाव ने यह साफ कर दिया है कि अब खेती में सिर्फ पैदावार नहीं, बल्कि समझदारी, विविधता और दीर्घकालिक सोच जरूरी है। ऐसे ही दौर में कुछ ऐसी फसलें और फलदार वृक्ष हैं, जो भले ही सुर्खियों में न हों, लेकिन किसानों को चुपचाप मजबूत आर्थिक सहारा दे सकते हैं। चकोतरा इन्हीं में से एक है। यह फल न तो आम की तरह हर घर में चर्चा का विषय है और न ही केला या सेब की तरह बड़े पैमाने पर कारोबार का हिस्सा, लेकिन जिन किसानों ने इसे समझा है, उनके लिए यह भरोसेमंद और टिकाऊ आय का जरिया बनता जा रहा है। चकोतरा को देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। कहीं इसे चकौतरा कहा जाता है, कहीं चकोत्रा और कहीं पोमेलो के नाम से पहचाना जाता है। यह नींबू वर्ग का एक बड़ा, सुगंधित और पोषक फल है, जिसका वैज्ञानिक नाम सिट्रस मैक्सिमा है। रुटासी परिवार से संबंध रखने वाला यह सदाबहार पेड़ एक बार स्थापित हो जाने के बाद दशकों तक फल देता है। यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। एक ऐसा पेड़, जो 30 से 40 साल तक लगातार उत्पादन दे सकता है, वह किसान के लिए किसी फिक्स्ड डिपॉजिट से कम नहीं होता। चकोतरा का पेड़ आमतौर पर 5 से 10 मीटर तक ऊंचा हो जाता है और इसका फैलाव भी अच्छा होता है। इसके फल आकार में बड़े और वजन में भारी होते हैं। एक फल सामान्य तौर पर एक से तीन किलो तक का हो सकता है। इसका छिलका मोटा, स्पंजी और मजबूत होता है, जबकि अंदर का गूदा सफेद, हल्का गुलाबी या लाल रंग का पाया जाता है। स्वाद की बात करें तो कच्चा चकोतरा काफी खट्टा होता है, लेकिन पकने पर इसकी खट्टास काफी संतुलित हो जाती है और हल्की मिठास के साथ एक अलग ही स्वाद देता है। यही वजह है कि यह फल सलाद, जूस और आयुर्वेदिक उपयोगों में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। चकोतरा की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी का चयन बहुत कठिन नहीं है। यह उष्ण और उपोष्ण दोनों तरह की जलवायु में अच्छी तरह पनपता है। 20 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके लिए आदर्श माना जाता है। हल्की ठंड यह सहन कर लेता है, लेकिन ज्यादा पाला या बर्फबारी वाले इलाकों में इसका विकास रुक जाता है। मिट्टी की बात करें तो दोमट या बलुई दोमट मिट्टी, जिसमें जलनिकास अच्छा हो, चकोतरा के लिए सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 7.5 के बीच रहे तो पेड़ स्वस्थ रहता है और उत्पादन बेहतर होता है।

भारत में चकोतरा कोई नई खोज नहीं है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों जैसे असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर और नागालैंड में यह लंबे समय से उगाया जाता रहा है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी इसके पेड़ पारंपरिक रूप से पाए जाते हैं। हाल के वर्षों में बेहतर किस्मों और वैज्ञानिक तकनीकों के चलते पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में भी इसके सफल प्रयोग सामने आए हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां पाले की समस्या कम है। चकोतरा से वास्तविक आर्थिक लाभ तभी मिलता है जब किसान इसे अकेली फसल की तरह नहीं, बल्कि मिश्रित बागवानी के हिस्से के रूप में अपनाते हैं। शुरुआती चार-पांच सालों में जब पेड़ फल देना शुरू नहीं करता, तब उसके बीच दूसरी फसलें लेकर किसान अपनी आमदनी बनाए रख सकता है। यही मॉडल पूर्वोत्तर भारत, तटीय ओडिशा, आंध्र प्रदेश, केरल और महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में काफी सफल साबित हुआ है। अब उत्तर भारत के गर्म और पालारहित इलाकों में भी किसान इसी मॉडल को अपनाने लगे हैं। रोपण के लगभग चार से पांच साल बाद चकोतरा के पेड़ में नियमित फल आना शुरू हो जाता है। एक परिपक्व पेड़ से हर साल 75 से 100 फल आसानी से मिल जाते हैं। जब एक फल का औसत वजन 1.5 से 2.5 किलो तक हो, तो एक पेड़ से सालाना 100 से 200 किलो तक उत्पादन संभव है। अगर यह फल स्थानीय बाजार में 60 से 80 रुपये प्रति किलो के भाव से बिके, तो एक एकड़ में चकोतरा की खेती किसान को सारे खर्च निकालने के बाद भी 70 से 80 हजार रुपये तक की शुद्ध आमदनी दे सकती है। लेकिन असली कमाई तब शुरू होती है, जब किसान पारंपरिक बिक्री से आगे सोचता है। ऑर्गेनिक तरीके से उगाया गया चकोतरा आज के बाजार में 150 से 200 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है। इसका मतलब है कि वही उत्पादन तीन से चार गुना ज्यादा आमदनी दे सकता है। इसके अलावा अगर किसान चकोतरा की प्रोसेसिंग और वैल्यू एडिशन पर ध्यान दे, तो मुनाफा और भी बढ़ सकता है।

चकोतरा का जूस आज हेल्थ ड्रिंक के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इसके मोटे छिलके से बनने वाला कैंडिड पील, जैम और मुरब्बा बाजार में अच्छी कीमत पाते हैं। इसके छिलके से निकलने वाला तेल कॉस्मेटिक और सुगंध उद्योग में इस्तेमाल होता है, जहां इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। आयुर्वेद और घरेलू उपचारों में भी चकोतरा का विशेष स्थान है, जिससे इसका बाजार केवल फल मंडी तक सीमित नहीं रहता। अगर मोटे तौर पर गणित लगाया जाए तो एक हेक्टेयर में चकोतरा की वैज्ञानिक खेती से सामान्य परिस्थितियों में सालाना 3 से 4 लाख रुपये की आमदनी संभव है। अगर मौसम, बाजार और प्रबंधन अनुकूल रहे और प्रोसेसिंग को भी जोड़ा जाए, तो यही आमदनी 9 से 18 लाख रुपये तक पहुंच सकती है। हालांकि यह तभी संभव है जब किसान खेती के साथ-साथ बाजार, गुणवत्ता और ब्रांडिंग को भी समझे।

Pakistan और Bangladesh में हिंदू लहूलुहान हो रहे हैं और दुनिया खामोशी से तमाशा देख रही है

पाकिस्तान के सिंध प्रांत से आई एक खबर ने पूरे दक्षिण एशिया की अंतरात्मा को झकझोर दिया है। एक गरीब हिंदू किसान को केवल इसलिए गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया गया क्योंकि उसने अपनी जमीन पर झोपड़ी बनाने का साहस कर लिया था। यह हत्या किसी अंधेरी गली में नहीं बल्कि खुले आम ताकत और दहशत के प्रदर्शन के रूप में हुई। मृतक किसान वर्षों से उसी जमीन पर रह रहा था, लेकिन स्थानीय प्रभावशाली व्यक्ति ने अपने रसूख और हथियार के बल पर कानून को कुचल दिया। इस निर्मम हत्या के बाद सिंध के कई इलाकों में भारी विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। सड़कों पर उतरे हजारों लोगों ने नारे लगाए, रास्ते जाम किए और इंसाफ की मांग की। यह आक्रोश केवल एक व्यक्ति की हत्या का नहीं बल्कि दशकों से दबे हुए भय और अपमान का विस्फोट था। उधर, बांग्लादेश में हालात और भी भयावह तस्वीर पेश कर रहे हैं। बीते कुछ ही दिनों में वहां हिंदू समुदाय के खिलाफ हिंसा की कई घटनाएं सामने आई हैं। छत्तोग्राम में एक हिंदू किशोरी का शव मिलने की घटना ने समाज को हिला कर रख दिया। आशंका है कि उसके साथ बलात्कार के बाद हत्या की गई। यह कोई एक मामला नहीं है बल्कि कुछ ही दिनों में हिंदुओं की कई हत्याओं की खबरें आई हैं। मंदिरों में तोड़फोड़, घरों में आगजनी, महिलाओं के साथ हिंसा और डर का माहौल वहां की रोजमर्रा की सच्चाई बनता जा रहा है। भारत ने इन घटनाओं पर कड़ी चिंता जताई है और बांग्लादेश सरकार से त्वरित और कठोर कार्रवाई की मांग की है। लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि पीड़ितों को न सुरक्षा मिल रही है और न न्याय का भरोसा।

पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों ही देशों से आ रही ये खबरें यह साफ करती हैं कि वहां हिंदू अल्पसंख्यक होना आज भी एक खतरे के साथ जीने जैसा है। यह केवल कानून व्यवस्था की विफलता नहीं बल्कि देश और समाज दोनों की नैतिक हार है। देखा जाये तो सिंध के उस किसान की लाश और छत्तोग्राम की उस किशोरी का शव सिर्फ दो खबरें नहीं हैं। वे दक्षिण एशिया के उस आईने की तरह हैं जिसमें कट्टरता, असहिष्णुता और सत्ता के संरक्षण में पनपती हिंसा साफ दिखाई देती है। पाकिस्तान में हिंदुओं पर अत्याचार कोई नई बात नहीं है। जबरन धर्म परिवर्तन, जमीन हड़पना, झूठे मुकदमे और अब खुलेआम हत्या। यह सब उस देश में हो रहा है जो खुद को इस्लामी गणराज्य कहता है और बराबरी का दावा करता है। सवाल यह है कि क्या वहां हिंदू की जान की कोई कीमत है?

बांग्लादेश की कहानी भी अब अलग नहीं रही। कभी जिसे धार्मिक सहिष्णुता का उदाहरण बताया जाता था, वही देश आज अल्पसंख्यक हिंदुओं के लिए असुरक्षित होता जा रहा है। एक के बाद एक हत्याएं, महिलाओं के साथ बर्बरता और प्रशासन की कमजोर प्रतिक्रिया यह बताती है कि समस्या केवल अपराधियों की नहीं बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की भी है।

सबसे चिंताजनक पहलू अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी है। मानवाधिकार की दुहाई देने वाले वैश्विक मंच, शक्तिशाली देश और संस्थाएं इन घटनाओं पर या तो औपचारिक बयान देकर चुप हो जाते हैं या पूरी तरह नजरें फेर लेते हैं। यह चुप्पी बहुत कुछ कहती है। यह दर्शाती है कि मानवाधिकार अब नैतिक मूल्य नहीं बल्कि सुविधा के अनुसार इस्तेमाल होने वाला हथियार बन चुके हैं। जहां आर्थिक हित, सामरिक समीकरण या राजनीतिक लाभ आड़े आते हैं, वहां इंसानी जान की कीमत शून्य हो जाती है। राजनीतिक दृष्टि से देखें तो यह चुप्पी पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों को और दुस्साहसी बनाती है। जब उन्हें पता होता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई ठोस दबाव नहीं बनेगा, तो अल्पसंख्यकों पर अत्याचार एक नियमित प्रक्रिया बन जाती है। वहीं भारत के लिए यह मुद्दा केवल भावनात्मक या धार्मिक नहीं है बल्कि रणनीतिक भी है। सीमापार अस्थिरता, कट्टरता और अल्पसंख्यकों का दमन क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करता है। भारत को इस विषय पर स्पष्ट, कठोर और निरंतर रुख अपनाना होगा। केवल बयान देना पर्याप्त नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस मुद्दे को बार बार उठाना होगा, तथ्यों के साथ और दबाव के साथ। कूटनीति में शिष्टता जरूरी है लेकिन अन्याय के सामने नरमी नहीं बरती जानी चाहिए। भारत को यह भी साफ कहना होगा कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा किसी देश का आंतरिक मामला नहीं बल्कि सभ्य समाज की कसौटी है।

पश्चिमी रेलवे

विविध कार्य

डेप्युटी चीफ इंजीनियर (कंस्ट्रक्शन)I, पश्चिमी रेलवे, इंदौर (MP) टेंडर नंबर: IND/UJN/SIMHASTHA/01 आमंत्रित करते हैं। काम का नाम: स्टेशन/यार्ड में मेन लाइन, लूप/साइडिंग लाइनों और पॉइंट और क्रॉसिंग आदि के लिए BG ट्रैक बिछाना और जोड़ना, P. वे सामग्री का परिवहन, मौजूदा ट्रैक को हटाना, रेल की वेल्डिंग, मशीन से कुचले हुए पत्थर के गिट्टी की सप्लाई और बिछाने सहित रेल का नवीनीकरण, तटबंध/कटिंग में मिट्टी का काम और ब्लैंकेटिंग और उज्जैन यार्ड में अन्य संबंधित विविध कार्य: (1) उज्जैन - सिंहस्थ - 2028 के संबंध में NC यार्ड में स्टेबलिंग लाइन में प्रावधान। (2) सिंहस्थ - 2028 के संबंध में लोको यार्ड में स्टेबलिंग लाइन का प्रावधान और PQRS साइडिंग का स्थानांतरण। - अनुमानित लागत: रु. 14,80,92,147.68/- EMD: रु. 8,90,500/- टेंडर जमा करने की तारीख और समय: 15:00 बजे तक, ता. 06.02.2026। टेंडर खोलने की तारीख: तारीख ता. 06.02.2026 को 15:30 बजे। पात्रता मानदंड सहित टेंडर का पूरा विवरण ई-टेंडर पोर्टल www.ireps.gov.in और डेप्युटी चीफ इंजीनियर (कंस्ट्रक्शन)I, पश्चिमी रेलवे, इंदौर के कार्यालय में नोटिस बोर्ड पर उपलब्ध है, इंदौर प्लेटफॉर्म नंबर 1 के सामने

0988

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

अभियान

ज्ञान की अखंड धारा और जीवन की दिशा बदलने वाली शक्ति: मां सरस्वती की साधना, मंत्र और करियर-सफलता का विस्तृत आध्यात्मिक दर्शन

भारतीय सनातन परंपरा में मां सरस्वती केवल एक देवी नहीं, बल्कि चेतना की वह धारा मानी जाती हैं जो मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर, भ्रम से स्पष्टता की ओर और भय से आत्मविश्वास की ओर ले जाती है। जब भी जीवन में पढ़ाई ठहरने लगती है, निर्णय लेने की क्षमता कमजोर पड़ जाती है, करियर में बार-बार रुकावटें आने लगती हैं या व्यक्ति भीतर से खाली और असंतुष्ट महसूस करता है, तब शास्त्रों में मां सरस्वती की उपासना को सबसे प्रभावी साधना माना गया है। ज्ञान का अर्थ यहां केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि सही-गलत का विवेक, विचारों की स्पष्टता, वाणी की शुद्धता और जीवन के उद्देश्य की समझ भी इसी के अंतर्गत आती है। यही कारण है कि मां सरस्वती की कृपा को जीवन की दिशा बदलने वाली शक्ति कहा गया है।

मां सरस्वती का स्वरूप अत्यंत सात्विक, शांत और उज्ज्वल माना गया है। श्वेत वस्त्र, श्वेत कमल, वीणा और हंस—इन सभी प्रतीकों का गहरा आध्यात्मिक अर्थ है। श्वेत रंग मन और विचारों की शुद्धता का प्रतीक है, वीणा यह बताती है कि ज्ञान तभी फलदायी होता है जब उसमें संतुलन और साधना हो, और हंस यह संकेत देता है कि विवेकशील व्यक्ति ही सच्चे ज्ञान को ग्रहण कर सकता है। शास्त्रों में कहा गया है कि मां सरस्वती वहां नहीं टिकतीं जहां अहंकार, आलस्य, असत्य और अज्ञान का वास होता है। जहां जिज्ञासा, विनम्रता और सीखने की इच्छा होती है, वहीं उनकी कृपा सहज रूप से प्रवाहित होती है।

आज के समय में विद्यार्थी हों, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा हों, नौकरी या व्यवसाय में आगे बढ़ने की चाह रखने वाले लोग हों, लेखक, पत्रकार, कलाकार, शिक्षक या शोधकर्ता हों—हर किसी के जीवन में मानसिक दबाव, भ्रम और अस्थिरता एक सामान्य समस्या बन चुकी है। ऐसे में मां सरस्वती की साधना केवल धार्मिक आस्था नहीं रह जाती, बल्कि यह मन और मस्तिष्क को संतुलित करने की एक गहरी प्रक्रिया बन जाती है। मंत्र जाप को शास्त्रों में ध्वनि-योग कहा गया है, क्योंकि हर मंत्र एक विशेष ऊर्जा उत्पन्न करता है जो सीधे व्यक्ति के चित्त पर प्रभाव डालती है। जब कोई व्यक्ति नियमित रूप से श्रद्धा और नियम के साथ मंत्र जाप करता है, तो धीरे-धीरे उसका मन स्थिर होने लगता है, एकाग्रता बढ़ती है और विचारों में स्पष्टता आने लगती है।

मां सरस्वती की पूजा की प्रक्रिया भी केवल बाहरी विधि नहीं है, बल्कि इसके पीछे आंतरिक शुद्धता का सिद्धांत जुड़ा हुआ है। पूजा से पहले स्नान कर शरीर को शुद्ध करना, स्वच्छ वस्त्र पहनना और पूजा स्थल को साफ रखना प्रतीक है उस मानसिक तैयारी का, जिसमें साधक अपने भीतर की अशुद्धियों को भी त्यागने का संकल्प करता है। हाथ में फूल, अक्षत, तिल, फल और मिठाई लेकर संकल्प करना यह दर्शाता है कि साधक अपनी क्षमता के अनुसार मां को अर्पण कर रहा है, न कि दिखावे के लिए। संकल्प के समय मन में यह भावना रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है कि यह साधना केवल परीक्षा पास करने या नौकरी पाने तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन में सही दिशा और विवेक प्राप्त करने के लिए की जा रही है।

मंत्र जाप का प्रभाव तभी गहरा होता है जब उसमें निरंतरता और विश्वास हो। मां सरस्वती का बीज मंत्र ‘ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः’ को विद्या का मूल माना गया है। शास्त्रों में ‘ऐं’ बीज को बुद्धि और वाणी का स्रोत कहा गया है। जब इस मंत्र का नियमित जाप किया जाता है, तो व्यक्ति के भीतर छिपी सीखने की क्षमता धीरे-धीरे जाग्रत होने लगती है। जिन विद्यार्थियों को पढ़ाई में मन नहीं लगता, जो बार-बार भूलने की शिकायत करते हैं या जिनका आत्मविश्वास कमजोर होता है, उनके लिए यह मंत्र अत्यंत लाभकारी माना गया है। यह मंत्र केवल याददाश्त नहीं बढ़ाता, बल्कि विषय को समझने की शक्ति भी देता है।

मां सरस्वती की स्तुति में प्रसिद्ध मंत्र ‘या कुन्देन्दु तुषारहार धवला’ केवल एक श्लोक नहीं है, बल्कि यह एक गहरी प्रार्थना है कि देवी साधक के जीवन से अज्ञान और अंधकार को दूर करें। इस मंत्र के नियमित पाठ से वाणी में मधुरता आती है, विचारों में स्पष्टता आती है और रचनात्मकता का विकास होता है। यही कारण है कि जिन लोगों का कार्य बोलने, लिखने, पढ़ाने या सृजन से जुड़ा होता है, वे इस मंत्र को विशेष श्रद्धा से अपनाते हैं। यह मंत्र व्यक्ति को भीतर से सशक्त बनाता है और उसे अपनी बात स्पष्ट रूप से रखने की क्षमता देता है। नई शुरुआत के लिए ‘सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि’ मंत्र को शास्त्रों में अत्यंत शुभ माना गया है। जब कोई विद्यार्थी नई कक्षा में प्रवेश करता है, कोई युवा नए कोर्स या नई नौकरी की शुरुआत करता है या कोई व्यक्ति जीवन में नई दिशा चुनता है, तब इस मंत्र का जाप आत्मबल बढ़ाता है। यह मंत्र केवल सफलता की कामना नहीं करता, बल्कि यह भी प्रार्थना करता है कि साधक को निरंतर प्रगति और स्थिरता मिले। करियर में बार-बार असफलता झेल चुके लोगों के लिए यह मंत्र मानसिक संबल का काम करता है। कुछ मंत्र ऐसे भी माने गए हैं जो विशेष रूप से भय, संकोच और आत्मसंदेह को दूर करने में सहायक होते हैं। ‘ॐ ऐं ह्लीं श्रीं वाग्देव्यै सरस्वत्यै नमः’ जैसे मंत्रों का प्रभाव व्यक्ति की वाणी और आत्मविश्वास पर गहराई से पड़ता है। जिन लोगों को इंटरव्यू, परीक्षा या सार्वजनिक मंच पर बोलने से डर लगता है, उनके लिए यह मंत्र अत्यंत उपयोगी माना गया है। नियमित जाप से व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने लगता है और भीतर की झिझक धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

मंत्र जाप के साथ-साथ आचरण को भी शुद्ध रखना मां सरस्वती की कृपा के लिए अनिवार्य माना गया है। शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है कि विद्या का अपमान, अहंकार, असत्य और आलस्य मां सरस्वती को अप्रसन्न करते हैं। जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करके भी घमंड करता है या उसका दुरुपयोग करता है, उससे मां सरस्वती दूर हो जाती हैं। इसके विपरीत जो व्यक्ति सीखने की इच्छा रखता है, विनम्र रहता है और ज्ञान का उपयोग समाज और स्वयं के कल्याण के लिए करता है, उसके जीवन में विद्या स्वतः प्रवाहित होने लगती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

अटूट आस्था के 1000 वर्ष

“साल 1026 के हजार साल बाद आज 2026 में भी
सोमनाथ मंदिर दुनिया को संदेश दे रहा है कि मिटाने की मानसिकता रखने वाले खत्म हो जाते हैं,
जबकि सोमनाथ मंदिर आज हमारे विश्वास का मजबूत आधार बनकर खड़ा है।”

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

11 जनवरी का विशेष कार्यक्रम

प्रातः 10 बजे, सोमनाथ मंदिर के लिए अनगिनत लोगों के
अदम्य शौर्य और बलिदान की स्मृति में
प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में शंख सर्कल से हमीर जी सर्कल तक शौर्य यात्रा।

सुबह 10:30 बजे, शौर्य सभा में प्रधानमंत्री जी का विशेष उद्बोधन।

महाभिषेक | महाआरती

सुबह 10 बजे से डीडी न्यूज पर सीधा प्रसारण

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

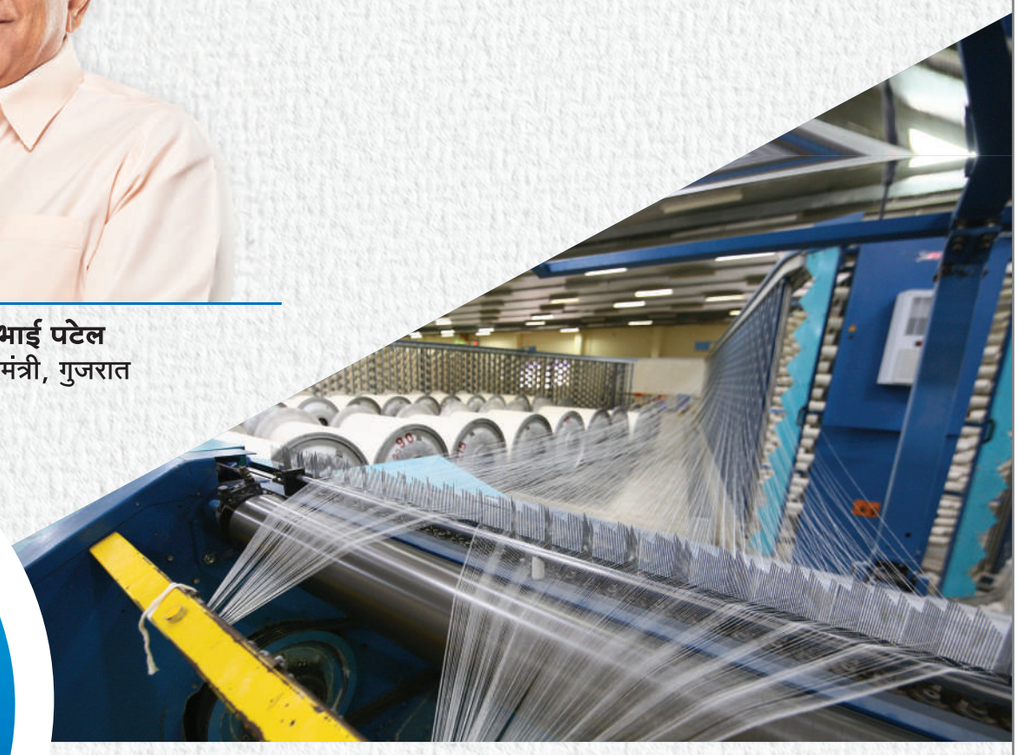

Vibrant GUJARAT REGIONAL CONFERENCES
Regional Aspirations, Global Ambitions

कच्छ और सौराष्ट्र
11 और 12 जनवरी, 2026

क्षेत्रीय आकांक्षाएँ, वैश्विक महत्वाकांक्षाएँ

प्रमुख क्षेत्र

- सिरेमिक्स
- MSMEs
- इंजीनियरिंग
- स्टार्टअप्स
- मिनरल्स
- पेट्रोकेमिकल्स
- फ़िशरीज़
- टेक्सटाइल
- पोर्ट्स और लॉजिस्टिक्स
- कौशल विकास
- पर्यटन और संस्कृति
- कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण
- ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम
- मशिनरी और इक्विपमेन्ट
- ब्लू इकोनॉमी

सम्मेलन की मुख्य विशेषताएँ

- उद्घाटन समारोह
- क्षेत्र-विशिष्ट सेमिनार
- कंट्री सेमिनार
- पैनल डिस्कशन्स
- सीईओ राउन्ड टेबल सम्मेलन
- स्टार्टअप सम्मान समारोह
- B2B / B2G मीटिंग्स
- विशेष दौरे
- औद्योगिक दौरे
- क्षेत्रीय MSME सम्मेलन
- क्षेत्रीय पुरस्कार (MSMEs/आर्टिज़न)
- ट्रेड शो/प्रदर्शनी
- रिवर्स बायर-सेलर मीटिंग
- उद्यमी मेला
- विक्रेता विकास कार्यक्रम
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- समापन सत्र

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एक्ज़ीबिशन
11 से 15 जनवरी, 2026 | सुबह 10:00 बजे से शाम 5:30 बजे तक

माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी जी
द्वारा शुभारंभ

गरिमामय उपस्थिति
श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात
श्री हर्ष संघवी
माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

11 जनवरी, 2026, रविवार | 12:30 बजे | मारवाड़ी युनिवर्सिटी, राजकोट, गुजरात

"वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस से गुजरात के औद्योगिक उत्कर्ष की नई दिशा खुलेगी।"
- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

भागीदार देश: Japan, Rwanda, South Korea, Ukraine

भागीदार संस्थाएँ: icbc INDO CANADIAN BUSINESS CHAMBER, JETRO Japan External Trade Organization, US-INDIA, U.S.-India Business Council, THE WORLD BANK IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP, ACMA, IACC INDO-AMERICAN CHAMBER OF COMMERCE, UIBC, kotra Korea Trade-Investment Promotion Agency, Trade Representation of the Russian Federation, FEBI, AMCHAM INDIA

सीधा प्रसारण: CMOGuj | CMOGuj | CMOGujarat | CMOGujarat | vibrantgujarat | vibrantgujarat | vibrant_gujarat | vibrantgujarat

वेबसाइट के लिए स्कैन करें

कार्यक्रम स्थल तक पहुँचने के लिए स्कैन करें